अगले साल भारत में 52 लाख टन ई-कचरा निकलेगा, 2016 में सिर्फ 20 लाख टन निकला था, तीन साल में 2.6 गुना बढ़ोतरी होगी

एजेंसी | नई दिल्ली

टेक्नोलॉजी में लगातार बदलाव से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की खपत का पैटर्न भी तेजी से बदल रहा है। पुराने की जगह नई टेक्नोलॉजी वाले उपकरणों का उपयोग बढ़ने से ई-कचरा बढ़ रहा है। भारत में 2020 तक इसका आंकड़ा बढ़कर 52 लाख टन तक पहुंच सकता है। यह 2016 में निकले 20 लाख टन कचरे से 2.6 गुना अधिक है। उद्योग संगठन एसोचैम और पेशेवर सेवाएं देने वाली फर्म ईवाई के एक संयुक्त अध्ययन में यह अनुमान व्यक्त किया गया है।

इसके मुताबिक डिजिटल क्रांति, सामाजिक और आर्थिक विकास, तेजी से उन्नत होती टेक्नोलॉजी से ई-कचरा तेजी से बढ़ रहा है। विकसित देशों द्वारा विकासशील और अविकसित देशों में इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक इक्विपमेंट के कचरे डम्प करना भी एक बड़ी वजह है। टीवी, कंप्यूटर, लैपटॉप, टैबलेट, मोबाइल फोन, टेलीकम्युनिकेशन उपकरण, इलेक्ट्रॉनिक मशीन ई-कचरा के प्रमुख स्रोत हैं।

ई-कचरा प्रबंधन संशोधन अधिनिमय 2018 के तहत उत्पादकों को कुल ई-कचरे का 10-70% जमा करना होता है। लेकिन अभी उद्योग जगत ऐसा नहीं कर पा रहा है। गौरतलब है कि करीब 70% ई-कचरा घरों से निकलता है। घरों से निकलने वाले ई-कचरे का 95% असंगठित क्षेत्र (छोटी दुकानों) द्वारा जमा किया जाता है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत को कम लागत वाले और पर्यावरण के अनुकूल रिसाइकलिंग प्रणाली अपनाने की जरूरत है। ई-कचरे से पारा, कैडमियम, क्रोमियम, शीशा, पीवीसी, ब्रोमिनेटेड फ्लेम रिटार्डेंट्स बेरिलियम, एंटीमनी और थैलेट्स जैसे घातक रसायन और धातु निकलते हैं। लंबे समय तक इनके संपर्क में रहने से तंत्रिका तंत्र, किडनी, हड्डियों, प्रजनन प्रणाली समेत शरीर के कई हिस्सों पर बुरा असर पड़ता है।

ई-कचरा पैदा करने में महाराष्ट्र आगे, लेकिन रिसाइकलिंग में पीछे

राज्य	योगदान	रिसाइकलिंग (टन में)
महाराष्ट्र	19.8%	47,810
तमिलनाडु	13%	53,427
यूपी	10.1%	86,130

वर्ष 2020 तक 52 लाख टन पर पहुंच सकता है ई-कचरा

■ नई दिल्ली (वार्ता)।

डिजिटल क्रांति और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार हो रहे बदलाव के कारण वर्ष 2020 तक देश में ई -कचरा बढ़कर 52 लाख टन तक हो सकता है। वर्ष 2016 में देश का कुल ई-कचरा 20 लाख टन था।

उद्योग संगठन एसोचैम और ईवाई के संयुक्त अध्ययन के मुताबिक, सामाजिक और आर्थिक विकास, डिजिटल बदलाव, तेजी से उन्नत होती प्रौद्योगिकी और विकासित देशों द्वारा विकासशील देशों तथा अविकसित देशों में इलेक्ट्रिकल तथा इलेक्ट्रानिक कचरा डाले जाने के कारण देश में ई-कचरा बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। सबसे अधिक ई-कचरा निकलने वाले दुनिया के पांच देशों में भारत भी शामिल है। अन्य चार देश चीन, अमेरिका, जापान और जर्मनी है।

देश में सबसे अधिक ई-कचरा महाराष्ट्र में निकलता है। देश में निकलने वाले कुल ई-कचरा में महाराष्ट्र का योगदान 19.8 प्रतिशत है लेकिन यहां हर साल मात्र 47,810 टन ई-कचरे की रिसाइकलिंग हो पाती है। तमिलनाडु का योगदान 13 प्रतिशत है और यह 53,427 टन की रिसाइकलिंग करता है। इसके अलावा कुल ई-कचरे में उत्तर प्रदेश का योगदान 10.1 प्रतिशत का है और यह करीब 86,130 टन कचरे की रिसाइकलिंग करता है।

प. बंगाल का योगदान 9.8 प्रतिशत, दिल्ली का 9.5 प्रतिशत, कर्नाटक का 8.9 प्रतिशत, गुजरात का 8.8 प्रतिशत तथा मध्य प्रदेश का 7.6 प्रतिशत है।

रिपोर्ट

देश में इतना तेजी से क्यों बढ़ रहा है ई कचरा

सामाजिक व आर्थिक विकास, डिजिटल बदलाव, तेजी से उन्नत होती प्रौद्योगिकी और विकासित देशों द्वारा विकासशील देशों तथा अविकसित देशों में इलेक्ट्रिकल तथा इलेक्ट्रानिक कचरा डाले जाने के कारण देश में ई-कचरा बड़ी तेजी से बढ़ रहा है।

- वर्ष 2016 में देश में कुल 20 लाख टन था ई कचरा
- सर्वाधिक ई कचरा पैदा करने वाले पांच देशों में भारत भी
- शेष चार देशों में चीन, अमेरिका, जापान और जर्मनी
- महाराष्ट्र में सर्वाधिक 19.8 फीसद निकलता है ई कचरा
- ई कचरा में उत्तर प्रदेश का हिस्सा दस फीसद से ज्यादा

Navodaya Times Page 13 4 March, 2019

देश में 2020 तक 52 लाख टन हो सकता है ई-कचरा

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसी): डिजीटल क्रांति और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार हो रहे बदलाव के कारण वर्ष 2020 तक देश में ई-कचरा का उत्पादन बढ़कर 52 लाख टन तक हो सकता है। वर्ष 2016 में देश का कुल ई-कचरा 20 लाख टन था।

उद्योग संगठन एसोचैम और ई.वाई. के संयुक्त अध्ययन के मुताबिक सामाजिक और आर्थिक विकास, डिजीटल बदलाव, तेजी से उन्नत होती प्रौद्योगिकी और विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों तथा अविकसित देशों में इलैक्ट्रिकल तथा इलैक्ट्रॉनिक कचरा डाले जाने के कारण देश में ई-कचरा बड़ी तेजी से बढ़ रहा है।

सबसे अधिक ई-कचरा उत्पादित करने वाले दुनिया के 5 देशों में भारत भी शामिल है। अन्य 4 देश चीन, अमरीका, जापान और जर्मनी हैं। देश में सबसे अधिक ई-कचरा महाराष्ट्र में उत्पादित होता है। देश में उत्पादित कुल ई-कचरा में महाराष्ट्र का योगदान 19.8 प्रतिशत है लेकिन यह हर साल मात्र 47,810 टन ई-कचरे की रिसाइक्लिंग करता है। तमिलनाडु का योगदान 13 प्रतिशत है और यह 53,427 टन की रिसाइक्लिंग करता है।

इसके अलावा कुल ई-कचरे में उत्तर प्रदेश का योगदान 10.1 प्रतिशत का है और यह करीब 86,130 टन कचरे की रिसाइक्लिंग करता है। पश्चिम बंगाल का योगदान 9.8 प्रतिशत, दिल्ली का 9.5 प्रतिशत, कर्नाटक का 8.9 प्रतिशत, गुजरात का 8.8 प्रतिशत तथा मध्य प्रदेश का 7.6 प्रतिशत है।

देश में 2020 तक 52 लाख टन हो सकता है ई-कचरा

दुनिया में सबसे ज्यादा ई-कचरा पैदा करता है भारत

नई दिल्ली, 3 मार्च (एजेंसियां)। डिजिटल क्रांति और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार हो रहे बदलाव के कारण वर्ष 2020 तक देश में ई -कचरा का उत्पादन बढ़कर 52 लाख टन तक हो सकता है। वर्ष 2016 में देश का कुल ई-कचरा 20 लाख टन था।

उद्योग संगठन एसोचैम और ईवाई के संयुक्त अध्ययन के मुताबिक, सामाजिक और आर्थिक विकास, डिजिटल बदलाव, तेजी से उन्नत होती प्रौद्योगिकी और विकासित देशों द्वारा विकासशील

देशों तथा अविकसित देशों में इलेक्ट्रिकल तथा इलेक्ट्रॉनिक कचरा डाले जाने के कारण देश में ई-कचरा बड़ी तेजी से बढ़ रहा है।

सबसे अधिक ई-कचरा उत्पादित करने वाले दुनिया के पांच देशों में भारत भी शामिल है। अन्य चार देश चीन, अमेरिका, जापान

- **महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा पैदा होता है ई-कचरा**
- **चार साल में ढाई गुना तक बढ़ा ई-कचरा**

और जर्मनी हैं। देश में सबसे अधिक ई-कचरा महाराष्ट्र में उत्पादित होता है। देश में उत्पादित कुल ई-कचरा में महाराष्ट्र का योगदान 19.8 प्रतिशत है लेकिन यह हर साल मात्र 47,810 टन ई-कचरे की रिसाइकलिंग करता है। तमिलनाडु का योगदान 13 प्रतिशत है और यह 53,427 टन की रिसाइकलिंग करता है। इसके अलावा कुल ई-कचरे में उत्तर प्रदेश का योगदान 10.1 प्रतिशत का है और यह करीब 86,130 टन कचरे की रिसाइकलिंग करता है। पश्चिम बंगाल का योगदान 9.8 प्रतिशत, दिल्ली का 9.5 प्रतिशत, कर्नाटक का 8.9 प्रतिशत, गुजरात का 8.8 प्रतिशत तथा मध्य प्रदेश का 7.6 प्रतिशत है। रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में वर्ष 2016 में 4.47 करोड़ टन ई-कचरा उत्पादित हुआ और इसके हर साल 3.15 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान है।

देश में 2020 तक 52 लाख टन हो सकता है ई-कचरा

डिजिटल क्रांति और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लगातार हो रहे बदलाव के कारण वर्ष 2020 तक देश में ई-कचरा का उत्पादन बढ़कर 52 लाख टन तक हो सकता है। वर्ष 2016 में देश का कुल ई-कचरा 20 लाख टन था।

नई दिल्ली | एजेंसी

उद्योग संगठन एसोचैम और ईवाई के संयुक्त अध्ययन के मुताबिक, सामाजिक और आर्थिक विकास, डिजिटल बदलाव, तेजी से उन्नत होती प्रौद्योगिकी और विकासित देशों द्वारा विकासशील देशों तथा अविकसित देशों में इलेक्ट्रिकल तथा इलेक्ट्रॉनिक कचरा डाले जाने के कारण देश में ई-कचरा बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। सबसे अधिक ई-कचरा उत्पादित करने वाले दुनिया के पांच देशों में भारत भी शामिल है। अन्य चार देश चीन, अमेरिका, जापान और जर्मनी हैं। देश में सबसे अधिक ई-कचरा महाराष्ट्र में उत्पादित होता है।

महाराष्ट्र का योगदान 19.8 प्रतिशत

देश में उत्पादित कुल ई-कचरा में महाराष्ट्र का योगदान 19.8 प्रतिशत है लेकिन यह हर साल मात्र 47,810 टन ई-कचरे की रिसाइकलिंग करता है। तमिलनाडु का योगदान 13 प्रतिशत है और यह 53,427 टन की रिसाइकलिंग करता है। इसके अलावा कुल ई-कचरे में उत्तर प्रदेश का योगदान 10.1 प्रतिशत का है और यह करीब 86,130 टन कचरे की रिसाइकलिंग करता है। पश्चिम बंगाल का योगदान 9.8 प्रतिशत, दिल्ली का 9.5 प्रतिशत, कर्नाटक का 8.9 प्रतिशत, गुजरात का 8.8 प्रतिशत तथा मध्य प्रदेश का 7.6 प्रतिशत है।